

रविवार 21 अप्रैल, 2024

विषय — प्रायश्चित का सिद्धांत

स्वर्ण पाठ: लूका 15: 31

"पुत्र, तू सर्वदा मेरे साथ है; और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही है।"

उत्तरदायी अध्ययन: रोमियो 8: 31, 35, 37-39

प्रेरितों के काम 17: 28

- ³¹ सो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?
- ³⁵ कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार?
- ³⁷ परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।
- ³⁸ क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई,
- ³⁹ न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी॥
- ²⁸ क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. उत्पत्ति 1: 26 (सं:), 27, 28 (सं 1st.), 31 (सं 1st.)

- ²⁶ फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं।
- ²⁷ तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।
- ²⁸ और परमेश्वर ने उन को आशीष दी।
- ³¹ तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है।

2. भजन संहिता 8: 3-6

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 3 जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और तारागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूँ;
4 तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?
5 क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है।
6 तू ने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तू ने उसके पांव तले सब कुछ कर दिया है।

3. यूहन्ना 10: 22-34 (से 1st), 37-39

- 22 यरूशलेम में स्थापन पर्व हुआ, और जाड़े की ऋतु थी।
23 और यीशु मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में टहल रहा था।
24 तब यहूदियों ने उसे आ घेरा और पूछा, तू हमारे मन को कब तक दुविधा में रखेगा? यदि तू मसीह है, तो हम से साफ कह दे।
25 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं ने तुम से कह दिया, और तुम प्रतीति करते ही नहीं, जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ वे ही मेरे गवाह हैं।
26 परन्तु तुम इसलिये प्रतीति नहीं करते, कि मेरी भेड़ों में से नहीं हो।
27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।
28 और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।
29 मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।
30 मैं और पिता एक हैं।
31 यहूदियों ने उसे पत्थरवाह करने को फिर पत्थर उठाए।
32 इस पर यीशु ने उन से कहा, कि मैं ने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं, उन में से किस काम के लिये तुम मुझे पत्थरवाह करते हो?
33 यहूदियों ने उस को उत्तर दिया, कि भले काम के लिये हम तुझे पत्थरवाह नहीं करते, परन्तु परमेश्वर की निन्दा के कारण और इसलिये कि तू मनुष्य होकर अपने आप को परमेश्वर बनाता है।
34 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया।
37 यदि मैं अपने पिता के काम नहीं करता, तो मेरी प्रतीति न करो।
38 परन्तु यदि मैं करता हूँ, तो चाहे मेरी प्रतीति न भी करो, परन्तु उन कामों की तो प्रतीति करो, ताकि तुम जानो, और समझो, कि पिता मुझ में है, और मैं पिता में हूँ।
39 तब उन्होंने फिर उसे पकड़ने का प्रयत्न किया परन्तु वह उन के हाथ से निकल गया॥

4. यूहन्ना 14: 9 (ईश ने कहा) केवल, 10, 12-14, 27

- 9 ईश ने कहा... ।
- 10 क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में हैं? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।
- 12 मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।
- 13 और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूँगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।
- 14 यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूँगा।
- 27 मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।

5. यूहन्ना 15: 1-11, 14

- 1 सच्ची दाखलता मैं हूँ; और मेरा पिता किसान है।
- 2 जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह छांटता है ताकि और फले।
- 3 तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो।
- 4 तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।
- 5 मैं दाखलता हूँ: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।
- 6 यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाई फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं।
- 7 यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा।
- 8 मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चले ठहरोगे।
- 9 जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो।
- 10 यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे: जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।
- 11 मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।
- 14 जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, यदि उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो।

6. यूहन्ना 17: 1 (से 3rd), 4-7, 15, 20, 21

- 1 यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखे आकाश की ओर उठाकर कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची, अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।
- 4 जो काम तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है।
- 5 और अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत के होने से पहिले, मेरी तेरे साथ थी।
- 6 मैं ने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया: वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे वचन को मान लिया है।
- 7 अब वे जान गए हैं, कि जो कुछ तू ने मुझे दिया है, सब तेरी ओर से है।
- 15 मैं यह बिनती नहीं करता, कि तू उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख।
- 20 मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उन के लिये भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों।
- 21 जैसा तू हे पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिये कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 522: 10-11

अस्तित्व, देवत्व से अलग, विज्ञान असंभव के रूप में समझाता है।

2. 361: 16-20

जैसे पानी की एक बूंद सागर के साथ है, सूर्य के साथ प्रकाश की एक किरण, यहां तक कि भगवान और मनुष्य, पिता और पुत्र, अस्तित्व में एक हैं। शास्त्र कहता है: "क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं।"

3. 587: 5-8

परमेश्वर। मैं जो महान हूं; सर्व-ज्ञान, सर्व-दर्शन, सर्व-कार्य, सर्व-ज्ञान, सर्व-प्रिय और शाश्वत; सिद्धांत; मन; अन्तः मन; आत्मा; जिंदगी; सत्य; प्रेम; सभी पदार्थ; बुद्धि।

4. 475: 5-22

सवाल - मनुष्य क्या है?

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

उत्तर — आदमी भौतिक नहीं है; वह मस्तिष्क, रक्त, हड्डियों और अन्य भौतिक तत्वों से बना नहीं है। पवित्रशास्त्र हमें सूचित करता है कि मनुष्य परमेश्वर की छवि और समानता में बना है। सामग्री वह समानता नहीं है। आत्मा की समानता आत्मा के विपरीत नहीं हो सकती। मनुष्य आध्यात्मिक और परिपूर्ण है; और आध्यात्मिक और परिपूर्ण होने के कारण, उसे इस तरह से क्रिश्चियन साइंस में समझना चाहिए। आदमी विचार है, प्रेम की छवि; वह काया नहीं है। वह ईश्वर का यौगिक विचार है, जिसमें सभी सही विचार शामिल हैं; भगवान की छवि और समानता को दर्शाता है कि सभी के लिए सामान्य शब्द; विज्ञान में पाई जाने वाली सचेत पहचान, जिसमें मनुष्य ईश्वर या मन का प्रतिबिम्ब है, और इसलिए शाश्वत है; जो परमात्मा से अलग नहीं है; जिसे देवता से एक भी गुण नहीं मिला है; जो अपने आप में कोई जीवन, बुद्धिमत्ता और न ही रचनात्मक शक्ति रखता है, बल्कि आध्यात्मिक रूप से वह सब कुछ दर्शाता है जो उसके निर्माता का है।

5. 42: 19-21

यह विश्वास कि मनुष्य का अस्तित्व या मन ईश्वर से अलग है, एक त्रुटि है। यीशु ने दिव्य विज्ञान के साथ इस त्रुटि का सामना किया और अपने गैर-अस्तित्व को साबित किया।

6. 18: 3-12

नासरत के यीशु ने पिता के साथ मनुष्य की एकता को सिखाया और प्रदर्शित किया, और इसके लिए हम उसे अंतहीन श्रद्धांजलि देते हैं। उनका मिशन व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों था। उन्होंने जीवन का काम न केवल स्वयं के प्रति न्याय में, बल्कि मनुष्यों पर दया करने में भी किया। यीशु ने निर्भीकता से, इंद्रियों के मान्यता प्राप्त सबूतों के खिलाफ, फरिसासिक पंथों और प्रथाओं के खिलाफ काम किया, और उन्होंने अपनी उपचार शक्ति के साथ सभी विरोधियों का खंडन किया।

7. 19: 29-5

यीशु ने इस आज्ञा का आग्रह किया, "तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना," जिसे इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है: आपको नश्वर के रूप में जीवन का कोई विश्वास नहीं होगा; तुम बुराई को नहीं जानोगे, क्योंकि एक ही जीवन है - भगवान, अच्छा। उन्होंने प्रतिपादन किया "जो कैसर का है, वह कैसर को; और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो।" अंत में उन्होंने सिद्धांत के रूपों या मनुष्य के सिद्धांतों के प्रति कोई सम्मान नहीं दिया, लेकिन आत्मा द्वारा नहीं बल्कि आत्मा द्वारा स्थानांतरित किए जाने पर अभिनय किया और बोला।

8. 136: 2-6

उन्होंने अपने अनुयायियों को सिखाया कि उनके धर्म में एक दिव्य सिद्धांत है, जो त्रुटि को बाहर निकालता है और बीमार और पापी दोनों को ठीक करता है। उन्होंने दावा किया कि कोई भी खुफिया, कार्रवाई, और न ही जीवन भगवान से अलग है।

9. 333: 16 (आगमन)-31, 32 (द्वारा)-9

नासरत के यीशु के आगमन ने ईसाई युग की पहली शताब्दी को चिह्नित किया, लेकिन मसीह वर्षों या दिनों की शुरुआत के बिना है। ईसाई युग से पहले और बाद में सभी पीढ़ियों के दौरान, आध्यात्मिक विचार के रूप में, मसीह, - भगवान का प्रतिबिंब, - शक्ति और अनुग्रह के कुछ उपाय के साथ आया है जो सभी मसीह, सत्य को प्राप्त करने के लिए तैयार हैं। अब्राहम, जैकब, मूसा और नबियों ने मसीहा या मसीह की शानदार झलकें पकड़ीं, जिसने दिव्य प्रकृति, प्रेम के सार में इन द्रष्टाओं को बपतिस्मा दिया। ईश्वरीय छवि, विचार, या मसीह ईश्वरीय सिद्धांत ईश्वर से अविभाज्य था, है और हमेशा के लिए रहेगा। यीशु ने अपनी आध्यात्मिक पहचान की इस एकता का उल्लेख किया: "पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं हूँ।" "मैं और पिता एक हैं।" "पिता मुझ से बड़ा है।" एक आत्मा में सभी पहचान शामिल हैं।

इन बातों से, यीशु का मतलब यह नहीं था कि मानव यीशु शाश्वत था या है, लेकिन यह कि ईश्वरीय विचार या मसीह ऐसा था और इसलिए प्राचीन इब्राहीम, यह नहीं कि साकार यीशु, पिता के साथ एक था, बल्कि आध्यात्मिक विचार था मसीह, पिता, परमेश्वर की गोद में हमेशा के लिए रहता है, जिससे वह स्वर्ग और पृथ्वी को प्रकाशित करता है; ऐसा नहीं है कि पिता आत्मा से बड़ा है, जो कि ईश्वर है, लेकिन अधिक से अधिक, असीम रूप से शारीरिक यीशु से, जिसका सांसारिक जीवन संक्षिप्त था।

10. 336: 25 (ईश्वर)-31

भगवान, मनुष्य का दिव्य सिद्धांत, और भगवान की समानता में आदमी अविभाज्य, सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत हैं। विज्ञान पूर्णता के नियम को प्रस्तुत करता है, और अमरता को प्रकाश में लाता है। भगवान और मनुष्य एक ही नहीं हैं, लेकिन ईश्वरीय विज्ञान, ईश्वर और मनुष्य के सह-अस्तित्व के क्रम में और शाश्वत हैं। ईश्वर माता-पिता का मन है, और मनुष्य ईश्वर की आध्यात्मिक संतान है।

11. 337: 7-11

सच्ची खुशी के लिए, मनुष्य को अपने सिद्धांत, दिव्य प्रेम के साथ सामंजस्य करना चाहिए; पुत्र को पिता के अनुरूप होना चाहिए, मसीह के अनुरूप होना चाहिए। ईश्वरीय विज्ञान के अनुसार, मनुष्य एक प्रकार से पूर्ण रूप में मन के रूप में है जो उसे बनाता है।

12. 470: 21-24, 32-5

ईश्वर मनुष्य का निर्माता है, और, मनुष्य का ईश्वरीय सिद्धांत शेष पूर्ण है, दिव्य विचार या प्रतिबिंब, मनुष्य, परिपूर्ण रहता है मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व की अभिव्यक्ति है।

साइंस में ईश्वर और मनुष्य के संबंध, ईश्वरीय सिद्धांत और विचार अविनाशी हैं; और विज्ञान जानता है कि कोई चूक नहीं हुई है और न ही सद्भाव में लौटा लेकिन यह ईश्वरीय आदेश या आध्यात्मिक कानून रखता है, जिसमें भगवान और वह जो कुछ भी बनाता है वह परिपूर्ण और शाश्वत है, अपने सनातन इतिहास में अपरिवर्तित रहा है।

13. 281: 14-17

एक अहंकार, एक मन या आत्मा जिसे भगवान कहा जाता है, अनंत व्यक्तित्व है, जो सभी प्रकार और शांति प्रदान करता है और जो व्यक्तिगत आध्यात्मिक व्यक्ति और चीजों में वास्तविकता और दिव्यता को दर्शाता है।

14. 539: 10-12

परमेश्वर कभी भी बुराई का तत्व नहीं दे सकता है, और मनुष्य के पास कुछ भी नहीं है जो उसने परमेश्वर से प्राप्त नहीं किया है।

15. 91: 1-8

प्रकाशितवाक हमें "नए स्वर्ग और नई पृथ्वी" के बारे में बताता है। क्या आपने कभी इस स्वर्ग और पृथ्वी का चित्र बनाया है, जो परम ज्ञान के नियंत्रण में प्राणियों द्वारा बसा हुआ है?

आइए हम खुद को इस विश्वास से मुक्त करें कि मनुष्य ईश्वर से अलग हो जाता है, और केवल ईश्वरीय सिद्धांत, जीवन और प्रेम का पालन करता है। यहाँ सभी सच्चे आध्यात्मिक विकास के लिए प्रस्थान का महान बिंदु है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6